अब्दुल मलिक ख़ान

मेरे गांव की माटी और पेड़

पेड़ लगाएँ

रिमझिम-रिमझिम बरसा पानी,
उछलें कूदें मौज मनाएँ,
हरियाली का मौसम आया,
एक-एक सब पेड़ लगाएँ

पिंकी तुम ले आओ कुदाली,
जाकिर, बंटी, मिट्टी खोदो,
अच्छी-सी फिर खाद मिलाकर,
आम, नीम, गुलमोहर बो दो,

भूले भटके जो आ जाए,
बैल, भैंस, बकरी या गैया
पौधों को नुकसान न पहुँचे,
झटपट बाड़ लगा लो भैया

हरे-भरे ये रहें हमेशा,
हम इन्हें प्यार से पालेंगे
बारी-बारी से रोजाना,
सब इनमें पानी डालेंगें

कल ये बढ़कर वृक्ष बनेंगे,
हमें फूल-फल छाया देंगे
पशु-पक्षी और श्रमिक जनों को,
मुक्त वायु दे, श्रम हर लेंगे

माटी मेरे गाँव की

रंग बिरंगे फूल खिलाती
माटी मेरे गाँव की।
इन्द्र धनुष धरती पर लाती
माटी मेरे गाँव की।

ताजे फल देती खाने को
धान, पान से झोली भरती।
प्यास बुझाती शीतल जल से
कभी किसी से भेद न करती।

सबसे अपना प्यार जताती,
माटी मेरे गाँव की।

कभी गगन से पड़े फुहारें
कभी सुहानी धूप मचलती।
नई नवेली दुल्हन जैसी
हर मौसम में रूप बदलती।

फसलों की चूनर लहराती,
माटी मेरे गाँव की।

मखमल जैसी हरी दूब पर
मोर नाचते पर फैलाये।
कलियों से बतियाती तितली
कोयल मीठे गीत सुनाये।

चन्दन जैसी महक लुटाती
माटी मेरे गाँव की।

कल-कल, छल-छल गाता
पानी।
सबकी प्यास बुझाता पानी।।

गाता पानी

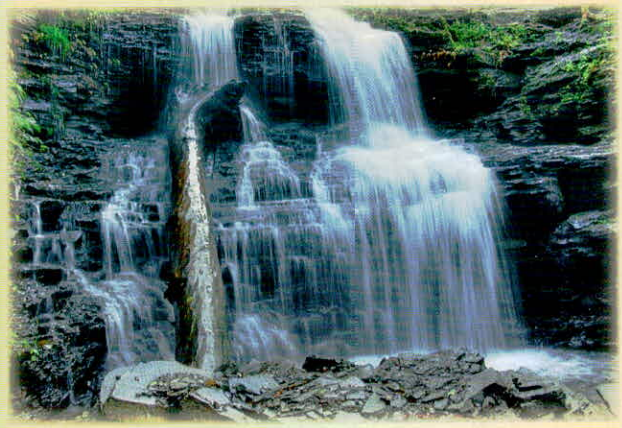

इन्द्र धनुष का हार पहनकर
बादल बन नभ में छा जाता।
तरह-तरह के रूप बनाकर
ढोल नगाड़े खूब बाजाता।

पेड़ों को नहलाता पानी।
कल-कल, छल-छल गाता पानी।

हवा महल से नीचे आकर
सावन के झूले डलवाता।
हरियाली का फर्श बिछाकर
जंगल-जंगल मोर नचाता।

बगिया को महकाता पानी।
कल-कल, छल-छल गाता पानी।

नदियां-नदियां, झरने-झरने
पर्वत से सागर तक जाता।
धरती की उर्वर गोदी से
मेहनत के मोती उपजाता।

जीवन चक्र चलाता पानी।
कल-कल, छल-छल गाता पानी।

संपर्क करें:
अब्दुल मलिक खान
रामनगर, भवानीमंडी
जिला, झालावाड़ (राज.)
पिन-326502